# धंधे वाले

उसने फिर हमेशा की तरह छुट्टन को बुलाया है। हर 'उस साल' वह उसे बुलाता है-जिस साल चुनाव होते हैं। वैसे बीच-बीच में उससे मुलाकात करता रहता है, ताकि ऐन वक्त पर वह उसे पहचानने से इन्कार न कर दे। राजनीति के इन दाँव-पेंचों में वह काफी निपुण है। यहाँ तक कि जब कोई त्योहार या कोई खास बात होती है वह उसके यहां उपहार के तौर पर एक बोतल शराब भी भिजवाता है। छुट्टन भी जानता है--शराब तो दूर एक नया पैसा भी इन्सान किसी मतलब से किसी को नहीं देता है।

छुट्टन काली बाबू का दोस्त है और आड़े वक्त पर काली बाबू का दाहिना हाथ भी है। काली बाबू उसी के दम पर साँप को भी जहर पिलाने का दम रखता है। पिछले चुनाव में उसने जो काम किया था, उसके हिसाब से काली बाबू रोज सुबह-शाम दोनों वक्त उसे गोश्त, कबाब के अलावा बोतलें भी पिला सकता है। यह छुट्टन भी खूब अच्छी तरह जानता है और वक्त-वक्त पर उनके यहाँ खाता भी रहता है। काली बाबू जानता है-- इन्सान की नसल पहचान लेने के बाद ही उससे काम करवाना चाहिये और इस पर लगाई रकम बिलकुल स्टेट बैंक के समान है। क्योंकि वह मरे हुये एलेक्शन की हड्डियों में भी रूहें डाल सकता है। आज के जमाने में एलेक्शन का लड़ाना भी एक कला है, हवा के रूख को बदल देना ही एलेक्शन की जीत है।

काली टोपी लगाये, बड़ी-बड़ी मूँछें, जीन की बंडी और चारखाने की तहमत के साथ निकली हुई छाती, मुहल्ले का हर कोई भंगी, चमार, रिक्शेवाला, मजूर उसे सलाम किये बगैर आगे से नहीं जाना चाहता है। जवाब में वह मुहल्ले वालों का ख्याल भी खूब रखता है। मुहल्ले की लड़कियों की शादी में वह जान तक लड़ा देता है, जमान के लिहाज से वह बिलकुल अजीब मेल का आदमी है।

उसे शहर का एक-एक दरोगा जानता है और उसे भी मालूम है-- किस दरोगा की कब बदली हुई है और कौन सा दारोगा बदल कर आया है। वह पुराना काम करने वाला आदमी है और पैसा लेने के बाद काम को पूरा करके ही हाथ बाहर निकालता है। इसीलिये वह अपने इलाके में मशहूर है।

काली बाबू अबकी बार फिर खड़े हुये हैं। वैसे दो बार पहले से भी होते आये हैं, लेकिन उसने अब तो अपना व्यापार सा बना लिया है। एलेक्शन में लगाई रकम को अपने मुनाफे के लिहाज से नहीं के बराबर समझता है। छुट्टन भी जानता है-गोश्त खाने वाले के लिये खाल की कीमत कुछ नहीं होती है।

काली बाबू ने छुट्टन को अबकी साल फिर बुलाया है। दो महीना बाकी रह गया है। तैयारी करनी है, समय रहते काम में जुट जाना अच्छा होता है। पिछली बार की अपेक्षा काली बाबू ने उसे सोफे पर बैठाया है। स्प्रिंगदार सोफे पर बैठते ही छुट्टन की बाछें खिल सी गई हैं।

"लाला बाबू! बड़ा अच्छा सोफा मंगवाया है।"

"ले जाओ अपने घर, मैं दूसरा मंगवा लूंगा।"

" नहीं, नहीं। मैंने तो वैसे ही कह दिया था।

"छुट्टन भाई! दो महीना रह गया है। मैंने सोचा-तुम्हें खबर कर दूं।"

"लाला बाबू! महंगाई काफी बढ़ गई है।"

"अरे यार! तुम्हें भी इस वक्त कहाँ की याद आई है। जैसे मेरी जेब से जा रहा है। अमा यार तुम्हारे लिये, कभी आज तक इस शख्श ने मुंह से ओफ भी किया है?मियाँ यह तो मेरा धंधा है, धंधा। जाम पर जाम पियो, वाह! जिसने यह बनाई है लोगों को गम से छुटकारा दिला दिया है।"

"मेरा मतलब है-अंगूर छाप वाली, नौ रूपये से साढ़े पन्द्रह की हो गई है।" "वाह, छुट्टन भाई वाह! क्या टके वाली बात की है?क्या रूपये को ही माई-बाप समझने लगे?अरे भई राम दुलारे! अलमारी से एक बोतल निकाल दे।"

"वाह लाला बाबू, वाह! तुम्हारा भी जवाब नहीं है। तुम्हारे जैसा आदमी भी खुदा मियां ने अकेला ही बनाया है। बहुत कम आदमी ऐसे हैं, जो आजकल के जमाने में दूसरे से आदमी की तरह बात करना जानते हैं"।

"आपके सामने आकर तो मेरे हमदम (चाकू) की भी धार मर जाती है। अच्छा बताओ तारीख क्या है?कब से काम शुरू किया जावे?"

"छुट्टन खाँ, तुम्हें बुलाने का मतलब सिर्फ तारीख बतलाना है। बस मेरा काम इतना ही है, बाकी सब जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है।"

"ओह! गलती हो गई, लाला बाबू, अलफाज वापस लेता हूँ, बड़ा बोल तो नहीं, लाला बाबू-एक दिन में फिजाँ बदल सकता हूँ। उसकी दुआ से छुट्टन भी अपने फन में कुछ कमाल रखता है।"

"अरे यह सब बातें मुझ से न किया करो यार, बरसों से बरतता चला आ रहा हूँ, क्या अब भी असल और नकल को पहचानना बाकी है?मुझे मालूम है- तुम किस फन के उस्ताद हो।"

"खुदा कसम, गलती हो गई । तुम्हारे पैरों का गुलाम हूँ, अच्छा तो फिर कल से काम शुरू कर दूं।"

"तुम्हें बुला लेने के बाद-काली बाबू बाकी, कुछ नहीं समझता है।"

"यह बात है-तो लाला बाबू, ऐसी रंगत लाऊँगा कि आपको भी मालूम पड़ जावेगा-छुट्टन ने इतने सालों में और क्या-क्या सीखा है। कबाब के लबालब कटोरोंपर, जब जाम के प्याले छलछलायेंगे, तो शैतान भी सीधे होकर चलने लगेंगे, मगर ! लाला बाबू, बोतलों का दाम काफी बढ़ गया है।"

"यार ! तुम बड़े नाकिस आदमी हो, फिर वही कबाब में हड्डी वाली बात कही। काली बाबू ने कभी आज तक नहीं सोचा है-पीतल के मुकाबले में सोना कितना महंगा पड़ता है। वक्त पड़ने पर, सोने को भी पीतल के भाव बेच डालता है। दुनिया भी जानती है-काली बाबू किस धातु का बना है। अरे भई दुलारे ! कहाँ मर गया ? ठिगनी वाली एक और निकाल ला।"

"अच्छा। इजाजत है ? चलूं। फिर हाजिर होऊँगा।"

डॉ. वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश'
परिमावाँ - प्रतापगढ़ (उ.प्र.)
२२५८२५